

M. T. B. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. ^{Ref.}
_{Ser.} 146

Title: *Rudra*

292

Incomplete

146

:	:	(५५) Rudra	: Title
:	:	Rudradya	: Author
:	:	(T-samhi la)	: Editor
:	:		: Year, Vols.
:	:		: Publisher
146	:	:	: Remarks

इति विसं मा स ॥ शुभं भव ॥ लु ॥

ताश्रमेव भूथश्रमेस्वगाकारश्रमे ॥ ८ ॥ जगिश्रमे घर्मश्रमे कर्मश्रमे सूर्यश्रमे प्रा
 णश्रमे धर्मश्रमे पृथिवीचमेदितिश्रमेदितिश्रमे द्यौश्रमे शक्रश्रमे गुलेयोदि
 शश्रमे यज्ञेन कल्पतामर्कमेसामर्चमेस्तोमश्रमे यजुश्रमे दीक्षाचमेतश्रमे पं
 क्रतुश्रमे व्रतचमे होराचमे योर्वस्याबहद्व्यंतरेचमे यज्ञेन कल्पतां ॥ ९ ॥ गभीश्रमे
 वसाश्रमे अविश्रमे अवीचमेदिसवाचमेदिसोहीचमे पंचाविश्रमे पंचावा
 चमे त्रिवश्रमे त्रिवसाचमे तुर्यवाचमे तुर्योहीचमे पञ्चवाचमे पञ्चोहीचमे उ
 क्षाचमे वशाचमे रुषभश्रमे वहचमे नृपुत्रचमे धेनुश्रमे आयुर्द्यज्ञेन कल्पतां प्रा
 णो यज्ञेन कल्पतामपा नो यज्ञेन कल्पता व्या नो यज्ञेन कल्पता चक्षुर्द्यज्ञेन कल्प
 तां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पता मनो यज्ञेन कल्पता वाग्यज्ञेन कल्पता मोक्षायज्ञेन क

९९

१५६
 अश्रमे धिपतिश्रमे मउपांशुश्रमे तयामश्रमे ऐंद्रवायवश्रमे मैत्रावरुणश्रमे
 मजाश्रमे नश्रमे प्रतिप्रस्थानश्रमे शुक्रश्रमे मंथीचमे मजाग्रयणश्रमे वैश्वदेवश्रमे
 मे भ्रुवश्रमे वैश्वानरश्रमे क्रतुगृहश्रमे तिगाह्याश्रमे ऐंद्राग्रश्रमे वैश्वदेवश्रमे
 मे ~~भ्रुवश्रमे वैश्वानरश्रमे~~ मस्तुतीयाश्रमे माहेन्द्रश्रमे आदित्यश्रमे सावित्र
 श्रमे सारस्वतश्रमे पौष्मश्रमे पालीवतश्रमे हरियोजनश्रमे ॥ ७ ॥ इधमश्रमे
 बर्हिश्रमे वेदिश्रमे धिसियाश्रमे सुबश्रमे चमसाश्रमे ग्रावाणश्रमे स्वरवश्रमे
 मउपरवश्रमे धिषवतोचमे द्रोणकलशश्रमे वायव्यानिचमे पूतश्रमे चमआ
 धवानीयश्रमे आग्नीध्रचमे हविर्दानं चमे गृहश्रमे सदैवश्रमे पुरोडाशश्रमे पच

९९

ॐ चंचमे हृष्टं चंचमे ग्राह्याश्च मे पशव आरण्याश्च येनेक त्पंतो व वित्तं च
मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वलुच मे वसतिश्च मे कर्म च मरात्तिश्च मे र्णश्च मे
ए मे र्मश्च मे शक्तिश्च मे गतिश्च मे ॥ ५ ॥ अग्निश्च मे इंद्रश्च मे सोमश्च मे इंद्रश्च मे सवि
ता च मे इंद्रश्च मे संखती च मे इंद्रश्च मे रुपा च मे इंद्रश्च मे ब्रह्मस्पतिश्च मे इंद्रश्च मे भानु
त्रश्च मे इंद्रश्च मे वरुणाश्च मे इंद्रश्च मे लवा च मे इंद्रश्च मे धाता च मे इंद्रश्च मे विश्व
श्च मे इंद्रश्च मे शिवनौ च मे इंद्रश्च मे महतेश्च मे इंद्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे प
थिवी च मे इंद्रश्च मे तरिक्षं च मे इंद्रश्च मे द्यौश्च मे इंद्रश्च मे दिराश्च मे इंद्रश्च मे म
ही च मे इंद्रश्च मे प्रजापतिश्च मे इंद्रश्च मे इंद्रश्च मे ॥ ६ ॥ अ० शुभ्रमे र्णिश्च मे द्यौ